वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

दिसम्बर – 2020

देवात्मा – अंक

महा यज्ञ के 1925 ई. के आरम्भिक दिन में एक बहुत बड़े प्रभाव शाली उपदेश का संक्षिप्त सार।

भगवान् देवात्मा का रक्षाकरी और जीवन दाता सम्बन्ध!

एक दिल को छू लेने वाला दृश्य

प्रत्येक अधिकारी मनुष्य अपने आत्मिक कल्याण के निमित्त सदा के लिए भगवान् देवात्मा का मुहताज है।

खुशखबरी

पिछले महीने अमरीका में 3 नवम्बर को आखिरी वोट डाले गए, वहां के राष्ट्रपति को चुनने के लिए, बेशक काफी देर पहले से लोगों ने वोट डालने शुरु कर दिए थे। ट्रम्प रेपैबलीकन पार्टी से सम्बन्धित हैं और उनके प्रतिद्वन्दी डैमोक्रेटिक। डैमोक्रेटिक पार्टी उदारवादी विचारों की है और दूसरी पार्टी अधिकतर गोरों और ईसाईयों की पक्षधर है। दोनों पार्टियों ने बड़ा संघर्ष किया, लोगों को क्या दूसरे देशों को भी उम्मीद थी कि ट्रम्प साहिब की ग़ल्त नीतियों से सन्तप्त जनता उन्हें जीतने नहीं देगी। क्योंकि उन पर बहुत गंभीर आरोप लगे ही नहीं सबूत समेत लगाए गए, जैसे उन पर मसख़रा, सनकी, लालची, भ्रष्ट, यौनाचारी, टैक्सचोर आदि के आरोप सिद्ध भी हुए। करोना की महामारी में कोई सावधानी का ऐलान नहीं किया गया, यहां तक कि मास्क पहनने वालों की स्वयं ट्रम्प साहिब खिल्ली उड़ाते थे। लेकिन फिर भी उन्हें बहुत वोट पड़े। बहुत कम वोटों से आगे होकर बारडेन जीत सके और वाईस प्रैज़ीडैंट के लिए कमला हैरिस जीत गई।

अब प्रश्न यह है कि इतनी गल्तियों और इतने ग़लत चरित्र के आदमी को फिर भी इतना समर्थन क्यों मिला? इसका एक ही कारण है, धार्मिक अन्धता। कई स्टेटस में तो उसे मसीहा मानते हैं कि यह हमारा रक्षक है। हमारी कुलीन समाज का रक्षक है। इसलिए अश्वेतों पर हुए जुल्म को वह जुल्म नहीं समझते जातिवाद, नीच ऊंच की भेद भाव, गोरे काले के भेदभाव की जड़ें इतनी गहरी हैं कि पढ़े लिखे लोग भी उससे बाहर नहीं आ सकते। अब हम समझ सकते हैं कि लगभग आधा अमरीका ट्रंप साहिब के लिए वोट डालने क्यों निकल पड़ा था।

लेकिन एक अश्वेत ने शान्ति का सांस लिया और रो रोकर कह रहा था, कि अब मेरा बच्चा स्कूल जाएगा, तो वह सुरक्षित घर आएगा, मुझे पूरी आशा है। हमारे देश में भी जातिवाद की जड़ें बहुत गहरी हैं, राजनीति में जातिवाद प्रधान रहता है। परम्पराओं से चले आ रहे विश्वास देश की जड़ें खोख़ली कर रहे हैं। घृणा इस सीमा तक पहुँच जाती है कि अपने धर्म वा जाति के पक्षधर दूसरी कहलाने वाली छोटी जातियों या अपने भिन्न धर्म वालों को मौत को घाट उतारना भी धर्म समझने लगते हैं।

बारडेन उदारवादी विचारों के हैं, वह और कमला हैरिस ने अमरीका को एक जुट रखने के विचार जनता के सामने रखे हैं।

अब खुशखबरी यह है कि उन्होंने राष्ट्रपति के शपत ग्रहण समारोह में बहुत माननीय और सुयोग्य हमारे पूर्व प्रधानमन्त्री डाक्टर मनमोहन सिंह जी को मुख्य अतिथि के रूप में आमन्त्रित किया है। हमारा दुर्भाग्य है कि ऐसे सुयोग्य अर्थशास्त्री की कदर हमारे देश में नहीं हुई। उनके लिए अनपढ़ों जैसे जनों द्वारा अपशब्द कहे गए। परन्तु होने वाले अमरीका के राष्ट्रपति ने उनके उदारवादी विचारों, और उनकी योग्यताओं को सामने रखकर मुख्य अतिथि बनाने का फैसला किया, किसी कट्टरवादी को न बुलाकर उन्होंने यह सन्देश दे दिया है कि वह उदारवादी विचारकों की कितनी क़दर करते हैं। सम्मान इसको कहते हैं। इज्जत पाई जाती है, खरीदी नहीं जाती। आज धन्यवादी हैं, बारडेन साहिब के और गर्व है हमें हमारे पूर्व प्रधानमन्त्री पर। देश के लिए यह बेहद खुशी का पल होगा। काश! यह खबर सच हो।

-सुरजीत बराड़

धर्म जीवन

खण्ड 31 अंक 12
दिसम्बर – 2020
वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

महा यज्ञ के 1925 ई. के आरम्भिक दिन में एक बहुत बड़े प्रभाव शाली उपदेश का संक्षिप्त सार।

(सेवक, पौष सं. 1982 वि.)

परम पूजनीय भगवान ने फ़रमाया कि, देवात्मा ने मनुष्यात्माओं के कल्याण के लिए जो सोलह यज्ञ स्थापन किए हैं, और जिनके साधन के सम्बन्ध में देव शास्त्र में आदेश दिए गए हैं, उनमें से आज जिस यज्ञ का आरम्भ होता है, उसे देवगुरु यज्ञ वा महा यज्ञ कहते हैं। यही यज्ञ मूल यज्ञ है; क्योंकि इसके निमित मनुष्यात्मा में जिस जिस प्रकार के उच्च वा सात्विक भावों की ज़रूरत है, उनकी प्राप्ति के बिना शेष यज्ञों के सम्बन्ध में साधन करने की कोई सच्ची और यथेष्ट योग्यता ही पैदा नहीं होती। प्रत्येक मनुष्य को नेचर के विविध विभागों के विविध सम्बन्धियों के सम्बन्ध में अपनी प्रकृत आत्मिक अवस्था के देखने के लिए और उसके आत्मा में जिस–जिस प्रकार के नीच अनुराग और जिस–जिस प्रकार की नीच घृणाएं वर्तमान हैं, और उनसे जिस–जिस प्रकार की मिथ्या और जिस–जिस प्रकार के अहित की उत्पत्ति होती है, उनके हानिकारक वा विनाशकारी रूप को उपलब्ध करने के लिए जिस अद्वितीय देव ज्योति की प्राप्ति की ज़रूरत है, वह एक मात्र **देवात्मा** से ही प्राप्त हो सकती है। इसी तरह उनसे सच्ची मोक्ष पाने और उससे भी बढ़कर किसी आत्मा को अपने जन्म जात किसी एक वा कई **सात्विक भावों** को विकसित करने के लिए भगवान देवात्मा के जिस अद्वितीय देव तेज की प्राप्ति की ज़रूरत है, उस की प्राप्ति भी एक मात्र **देवात्मा** से ही हो सकती है। इसलिए **इन दोनों की ही प्राप्ति के लिए देवात्मा के साथ आत्मिक सम्बन्ध के स्थापन करना ही मूल और लाज़मी आवश्यकता है।**

देवात्मा में इस **देव ज्योति** और इस **देव तेज** का विकास उनकी जिन हित और सत्य विषयक सर्वांग और अद्वितीय देव अनुराग और अहित और मिथ्या विषयक सर्वांग और अद्वितीय देव घृणा शक्तियों से हुआ है, उन **देव शक्तियों** से दुनिया के साथ कहलाने वाले उपास्य देवते वा माबूद खाली थे। **इसीलिए देवात्मा ने अपनी इन देव शक्तियों से विकसित इस देव ज्योति और अपने इस देव तेज के द्वारा नेचर के अटल नियमों के अनुसार मनुष्यात्माओं में जिस–जिस प्रकार के आश्चर्य जनक उच्च परिवर्तन उत्पन्न किए हैं, वह कोई माबूद पैदा नहीं कर सका, और उनके**

सिवाय ऐसे कहलाने वाले देवताओं का कहलाने वाला कोई अवतार वा उनका भेजा वा नियत किया हुआ कोई गुरु वा हादी आदि भी नहीं कर सका और न अब कर सकता है।

मेरी शिक्षा यह है, कि प्रत्येक मनुष्य को उसके अपने दिल के विविध भाव ही चलाते हैं। अब यदि किसी जन के भीतर यह भाव हो, कि किसी दूसरे जन का रुपया वा उसका माल मेरे पास आ जावे और मैं उससे एक वा दूसरा सुख लाभ करूं, मैं किसी की बेटी वा किसी की पत्नी वा किसी की बहिन के साथ अनुचित ताल्लुक पैदा करके अपना काम वासना का सुख लाभ करूं, तब पहले उसका दिमाग उसके किसी ऐसे भाव के हाथ में औज़ार बनकर उसके लिए तजवीज़ें सुझाएगा; फिर उसका वही भाव यथेष्ट बलवान होने पर उसके शरीर के हाथ पांव को हरकत में लाकर उस से उन बुरी तजवीज़ों को पूरा कराएगा। अतएव प्रत्येक मनुष्य अपनी एक वा दूसरी अनुराग वा घृणा शक्ति के द्वारा एक वा दूसरी प्रकार की हरकत वा गति करता है। इसलिए **मनुष्य अपने विविध प्रकार के नीच सुखों के अनुराग भावों से क्या अपनी ज़ात और क्या नेचर के अन्य अस्तित्वों के सम्बन्ध में जिस-जिस प्रकार की बुराइयों वा हानियों का मूजब बनता है, उससे सिवाय देवात्मा की अद्वितीय देव ज्योति और अद्वितीय देव तेज के किसी मज़हब वा गवर्नमेंट का कोई हुक्म मोक्ष नहीं दे सकता।**

इसलिए यह महा यज्ञ **मूल यज्ञ** है, क्योंकि किसी जन के भीतर विविध सम्बन्धों में जिस क़दर मोक्ष और विकास लाभ करने की योग्यता हो, उसे जब तक देवात्मा की **देव ज्योति** और उनका **देव तेज** न मिले, तब तक वह उतने दर्जे विकास लाभ नहीं कर सकता। अब प्रश्न यह है, कि देवात्मा की यह **देव ज्योति** और उनका यह **देव तेज** किसी जन को अपनी कोशिश वा अपने किसी साधन के द्वारा कैसे प्राप्त हो सकता है? इसका उत्तर यह है, कि देवात्मा के साथ आत्मिक सम्बन्ध स्थापन करने से। फिर दूसरा प्रश्न यह है, कि देवात्मा के साथ आत्मिक सम्बन्ध कैसे स्थापन हो? इसका उत्तर यह है, कि **देवात्मा के देवरूप के प्रति किसी जन में कुछ आकर्षण वा कशिश महसूस हो**। परन्तु जो जन नीच सुखों का अनुरागी है, उसके भीतर से पहले तो देवात्मा के प्रति कोई आकर्षण पैदा नहीं हो सकता, दूसरे यदि उसे इस प्रकार के आकर्षण का कोई भाव बीज रूप में अपने जन्म काल से मिला हो, तो वह उनके देव प्रभावों के द्वारा फूटने पर भी विरोधी सामानों में मर जाता है।

मनुष्यों के भीतर जिन जिन नीच सुख विषयक अनुरागों की भरमार है, उनमें से कितने ही यह हैं :-

(1) कई प्रकार के शारीरिक सुख विषयक अनुराग, यथा स्वाद अनुराग, काम अनुराग, आलस्य वा आराम अनुराग, विविध नशों का अनुराग।

(2) कई प्रकार के अहं मूलक सुख अनुराग, यथा स्वार्थ अनुराग, स्वेच्छाचार अनुराग, घमंड अनुराग आदि।

(3) अपने से बाहर धन सम्पत्ति के लिए अनुराग, पत्नी वा पति वा बच्चों के लिए अनुराग आदि।

और इन से जो कई प्रकार की नीच घृणाएं पैदा होती हैं, उनका अधिकार। इसी सिलसिले में पूजनीय भगवान ने इनमें से प्रत्येक नीच अनुराग की किसी क़दर व्याख्या की, और इन सुखों के दासत्व से जिस-जिस प्रकार के भयानक नतीजे पैदा होते हैं, उनका बयान फ़रमाया। शारीरिक सुख विषयक अनुराग के कुछ ख़ौफ़नाक पहलुओं को पेश करते हुए उन्होंने फ़रमाया कि अपने अपने शारीरिक सुखों के अनुरागी

जिस तरह से नशई बनते हैं, बदचलन बनते हैं, कितने ही लोग जो बदचलन नहीं बनते, वह अपने जोड़े के रिश्ते में काम सुख की ज़्यादतियां करके अपने-अपने शरीरों की सेहत का नाश करते हैं, कि जिससे कितने ही जन जवानी की उमर में ही अति दुर्बल और बीमार होकर तरह तरह के दुख पाते हैं, खाने पीने के सुख के पीछे अन्धे बनकर तरह तरह के असंयम करते और अपने अपने शरीर का नाश करते हैं, और उस में कई प्रकार के बड़े-बड़े रोगों को पैदा करे बिना आई मौत मरते हैं।

इस प्रकार विविध नीच रागों की भयानक छवि खैंचकर भगवान ने फरमाया, कि

ऐसे नीच अनुरागियों के भीतर देवात्मा के लिए कशिश क्योंकर पैदा हो? इसीलिए मेरी यह बहुत पुरानी शिकायत है, कि देव समाज के लोग सिवाय किसी-किसी जन के जो गिनती में आने के योग्य नहीं, क्या अपने आत्मा और क्या अपने शरीर और क्या अपने पारिवारिक जनों के आत्मिक जीवन वा किसी भी भले काम के सम्बन्ध में मेरे पास आकर कोई बातचीत नहीं करते, वह अपना कोई हाल मुझे नहीं बताते, क्योंकि उन्हें यह डर लगता है, कि देवात्मा किसी के सम्बन्ध में हमारी किसी अनुचित क्रिया वा नीच गति को प्रगट न कर दें, और हमारे किसी सुख दायक अनुराग की गुलामी को दूर करने के लिए अपने **देव प्रभाव** हम तक न पहुंचा दें। बेशक वह ऐसों के साथ खूब मिलते जुलते हैं, और उनके साथ मिलकर खूब बातचीत करते हैं, कि जिन के साथ उनकी प्रकृति का मेल होता है, जैसा कि कहा गया है :-

"कुनद हम जिन्स बा हम जिन्स परवाज़
कबूतर वा कबूतर बाज़ वा बाज़।"

अर्थात जिनकी प्रकृति एक जैसी होती है, वह आपस से मिलते हैं।

इसीलिए लोग अपने बीवी बच्चों और अपनी जैसी प्रकृति रखने वाले दोस्तों के साथ रहने में खुश रहते हैं। क्योंकि उनके भीतर जो जो नीच अनुराग वर्तमान होते हैं, उनकी वह उनमें तृप्ति वा अपना सुख महसूस करते हैं। अब जिस सूरत में देवात्मा के लिए किसी जन के आत्मा में कोई आकर्षण वा अनुराग न हो, तब साफ़ ज़ाहिर है, कि उनके साथ उसका कोई आत्मिक सम्बन्ध नहीं। देवात्मा उसकी पत्नी नहीं कि वह उसकी तरफ आकृष्ट हो, देवात्मा उसका बेटा नहीं कि वह उसके लिए कोई कशिश महसूस कर सकें; देवात्मा रुपया नहीं, जायदाद नहीं कि वह उसकी तरफ़ मायल हों।

फिर प्रश्न यह है, कि आया देवात्मा के लिए किसी मनुष्यात्मा में कशिश पैदा हो भी सकती है? हां बाज़ में उसका कुछ जन्म जात माद्दा होता है, जो अनुकूल हालात में फूटकर विकसित भी हो सकता है। परन्तु यह बात याद रखने के योग्य है, कि जिस वस्तु के लिए कशिश हो, उसके विरुद्ध वस्तु के लिए घृणा का होना लाज़मी है। यह दोनों शक्तियां साथ-साथ चलती हैं। इसीलिए नीच अनुरागों की ज़मीन में से उच्च अनुरागों का कोई अंकुर या तो फूट ही नहीं सकता, और यदि फूट आवे, तब वह उन नीच अनुरागों के जारी रहने वा बढ़ते रहने से विकसित नहीं होता, और आख़िरकार धीरे-धीरे मर जाता है।

इसी बयान के सिलसिले में भगवान देवात्मा ने श्रीमान देवत्व सिंह जी की ज़िन्दगी की कुछ घटनाएं सुनाई। अर्थात् पहले पहल जब उनके देव प्रभावों को पाकर उनके आत्मा में उच्च परिवर्तन उत्पन्न हुआ, तब उनके भीतर अपने जन्मजात सात्विक बीज के फूटने पर एक ओर देवात्मा के लिए आकर्षण का सात्विक भाव जाग्रत हुआ और उसके साथ ही उनके परम लक्ष्य की सिद्धि में सेवाकारी बनने का भाव भी पैदा हुआ और वह रुड़की में शिक्षा पाने

के दिनों में ही अपने साथी विद्यार्थियों में प्रचार का काम करते थे, और उससे केवल यही नहीं कि अपनी पढ़ाई में कोई हानि नहीं देखते थे, किन्तु फायदा देखते थे। फिर जब वह वहां की परीक्षा में पास हुए और सब इंजीनियरिंग ग्रेड में तारीफ के साथ पास हुए, और अपरेन्टिस ओवरसियर होकर अमृतसर में आए, तब वह अपने इस सात्विक आकर्षण के कारण वहां से रेल का सफ़र करके और रेल का किराया देकर उनसे मिलने के लिए इसी लाहौर में पहुंचा करते थे, जबकि अमृतसर की तुलना में जो लोग यहां मेमोरियल मन्दिर के हाते में ही रहते हैं, वह देवात्मा के प्रति एक ओर इस सात्विक आकर्षण के न रखने और दूसरी ओर कई प्रकार के नीच सुखों के अनुरागों के दास होने के कारण उनके पास आने के लिए कोई भाव नहीं रखते, और अपने वा अपनी सन्तान वा अपनी पत्नी वा पति के किसी प्रकार के हित को सम्मुख रखकर वा देव समाज की ही किसी सेवा के काम को मुख्य रखकर उनके पास पहुंचना नहीं चाहते और अपने **विकर्षण के कारण वह क्या देवात्मा और क्या आत्मा दोनों के ही सम्बन्ध में बहुत कुछ अज्ञानी और बहुत अन्धकार ग्रस्त हैं।** फिर उनमें से जिस किसी में देवात्मा के सम्बन्ध में कभी कोई सात्विक भाव भी जागा था, वह उनके सुख विषयक नीच अनुरागों से जो नीच घृणा पैदा होती है, उसके पैदा होने और देवात्मा से फट जाने से बिलकुल नष्ट हो गया। देवत्व सिंह भी इसी रूहानी मौत का शिकार होने वाले थे। क्योंकि उन के भीतर पहले पहल घमंड भाव का ज़ोर था और वह अपनी किसी नीच गति के विरुद्ध कोई बात देवात्मा से भी सुनना पसन्द न करते थे, और जब एक मात्र सच्चे गुरु होने के कारण देवात्मा उनके आत्मिक उद्धार के लिए उनकी एक वा दूसरी बुरी क्रिया को अपनी देव ज्योति के द्वारा उसके बुरे रूप में उनके सम्मुख दिखाने का संग्राम करते, तो वह अपने उस महा नीच भाव के कारण उनसे फट जाते, जिससे एक तरफ उनका **वह सात्विक आकर्षण बहुत कुछ नष्ट हो गया, और दूसरी तरफ़ उनका आत्मा अपने विषय में रोशनी पाने के योग्य न रहा और इसीलिए वह अन्धकार ग्रस्त होता चला गया।** अब यदि कुछ काल तक उनकी यह विनाशकारी हालत और भी जारी रहती, तो उनके इस आकर्षण के सात्विक सूत्र का जिसके द्वारा वह देवात्मा से अपना आत्मिक सम्बन्ध स्थापन करने के योग्य हुए थे, और जिसके द्वारा वह उनके देव प्रभावों के पाने का अवसर पाकर मोक्ष और उच्च जीवन में विकास लाभ कर सकते थे, वह पूर्णत: नष्ट हो जाता; मगर बहुत खैर हुई। अर्थात् एक दिन देवात्मा के उपदेश से उन्हें इस घमंड रूपी और महा विनाशकारी राक्षस का असल रूप दिखाई दे गया और उनके आत्मा में उसके लिए गहरी उच्च घृणा पैदा हो गई। तब से उनकी ज़िन्दगी का रास्ता बिलकुल बदल गया और वह देवात्मा के सम्बन्ध में आत्मिक साधन करने के योग्य बन गए और कई-कई घण्टे वह उनके सम्बन्ध में प्रतिदिन निज का साधन करके उनके देव प्रभाव लाभ करने के अधिकारी हो गए। वह भगवान देवात्मा के सम्बन्ध में वर्षों तक हानि परिशोध और हित परिशोध के कार्य गत साधन करते रहे, कि जिससे एक तरफ उनका आत्मा(जो पहले मर रहा था) फिर से ज़िन्दा होकर धीरे-धीरे श्रेष्ट बनने लगा, और दूसरी तरफ उनमें उन आत्माओं के भले के लिए जिन में उच्च परिवर्तन लाने के निमित्त देवात्मा व्याकुल थे, उपकार विषयक सात्विक भाव भी बढ़ने लगा और वह गिरे हुए आत्माओं के उठाने और उनमें आत्मिक हित का भाव पैदा करने के काम में लग गए, और इसीलिए उनके द्वारा बहुत से आत्माओं का कल्याण हुआ। वह सचमुच के प्रचारक कर्मचारी थे, और इसीलिए उनकी यादगार में वह सामने का

कर्मचारी निवास बनाया गया है।

शोक कि अब उन्हें श्रीमान् **देवत्व सिंह** जैसे सुयोग्य प्रचारक प्राप्त नहीं हैं। हां **देव समाज के किसी विभाग और चार्ज लेने के लिए जिस प्रकार के सात्विक अनुरागी और कर्तव्य परायण कर्मचारियों की आवश्यकता है, वह उन्हें अब प्राप्त नहीं हैं।** बेशक देव समाज में कुछ आदमी ऐसे हैं, कि जो परिश्रमी हैं, काम चोर नहीं हैं, पूरे दयानतदार हैं, मगर वह देव समाज के किसी विभाग का चार्ज लेने के योग्य नहीं हैं।

मुझे सबसे बढ़कर बहुत बड़ा फिकर प्रचार विभाग के सम्बन्ध में रहता है। कितने ही काम तो रुपए के द्वारा हो सकते हैं, **मगर आत्मिक परिवर्तन का काम रुपए से नहीं हो सकता। इसके लिए सात्विक भावधारी** ऐसे आत्माओं की ज़रूरत है, कि जो **एक तरफ देवात्मा और आत्मा के सम्बन्ध में देव ज्योति** से रोशन हों, और जो लोग इस रोशनी से ख़ाली होने के कारण तरह तरह के मिथ्या विश्वासों में फंसे हुए हैं, और उनके कारण तरह तरह से अपनी और औरों की महा हानि कर रहे हैं, उन तक वह सत्य ज्ञान की रोशनी पहुंचा सकें, और **दूसरी तरफ वह खुद भी नीच रागों और नीच घृणाओं की दासत्व से मोक्ष चाहते हों** और औरों तक भी देवात्मा के **देव तेज** को पहुंचाकर उन्हें उनके पतित जीवन से निकाल सकते हों।

इन उच्च गुणों से जो लोग ख़ाली हैं, वह न देवात्मा के साथ कोई सम्बन्ध रखते हैं और न और आत्माओं की भलाई का ही कोई सच्चा और प्रबल भाव रखते हैं। मगर मैं यह जानता हूं, और साफ़ तौर से देखता हूं, कि नेचर का विकासकारी नियम और काम अटल है। मेरी जो शुभ इच्छा आज पूरी नहीं हो सकती, वह कल पूरी होगी, मगर ठीक समय के आने पर ज़रूर पूरी होकर रहेगी। मूल वस्तु यह है, कि यदि तुम किसी तरह देवात्मा वा नेचर के विकास के कार्य के अनुरागी और नेचर के विकास (evolution) पर विश्वास रखकर उसके रास्ते के मुसाफ़िर बनो, तो नेचर के उस विकासकारी विभाग की ओर से तुम्हें हालात के अनुसार अवश्य प्रत्येक सहायता मिलेगी। इस सच्चे विश्वास की बिना पर यदि तुम काम करने के योग्य बन सको और देवात्मा के साथ सम्बन्ध स्थापन करने के लिए जिन सात्विक भावों की आवश्यकता है, उन्हें यदि तुम अपने आत्मा में विकसित कर सको, तो निश्चय तुम्हारा आत्मा ऊपर को आ सकता है, और पतन से उद्धार पा सकता है; और वह देवत्व सिंह की न्याईं आत्मिक परिवर्तन का काम करने के योग्य बन सकता है।

तब क्या हमें ऐसे आदमी मिलेंगे, कि जो नाम, इज़्ज़त, धन और शारीरिक सुखों के लालच और उनकी दासत्व के प्रति घृणा अनुभव करके हमारे काम में लग सकें। याद रखो कि मैं सब प्रकार की पुरोहिताई को नष्ट करने के लिए प्रगट हुआ हूं। मैं स्वाद अनुराग, काम अनुराग, आलस्य अनुराग आदि शारीरिक सुखों की दासत्व को मिटाने के लिए ज़ाहर हुआ हूं, मैं स्वेच्छाचारिता को नष्ट करने के लिए आया हूं। मैं स्वार्थ परता को ग़ारत करने के लिए पैदा हुआ हूं। मैं घमंड से अधिकारी जनों का उद्धार करने के लिए आया हूं, आदि। आया नेचर से मुझे ऐसे आदमी मिलेंगे, जो इस प्रकार के नीच अनुरागों से उद्धार पाने के आकांक्षी बन सकें, और सत्य धर्म जीवन को अपने लिए मुख्य और सार वस्तु बना सकें, जो औरों की भलाई के लिए जीना पसंद करें, जो अपनी आत्मिक भलाई और औरों की आत्मिक भलाई को मुख्य और शेष सब सम्बन्धियों और अपने नीच सुखों को गौण रख सकें? मेरा यह पूर्ण विश्वास है, कि नेचर के प्रबन्ध के अनुसार समय के आने पर ज़रूर ऐसे आदमी मिलेंगे और मेरी यह रात दिन की व्याकुलता यूं ही न

जाएगी। मुझे ऐसे जन मिलेंगे, जो आत्मा और देवात्मा को पहचानेंगे और जो अपने और औरों के आत्मिक हित के लिए अपना सब कुछ अर्पण कर सकेंगे, और जो मुझे मुख्य और अपने आपको गौण रख सकेंगे। वह मुझे गुरु कहकर और गुरु मानकर अपने आप को अपना गुरु न बनाएंगे।

इसी सिलसिले में जीवन दाता भगवान देवात्मा ने भरे दिल से ज़ोरदार अपील करते हुए फ़रमाया, कि

तुम काहे को उन वस्तुओं को चाहते हो, जो तुम्हारी नहीं? क्यों न देव ज्योति से तुम्हारी आंखे खुलें और तुम्हारा अन्धकार दूर हो, और तुम देख सको कि जिन को तुम अपनी पत्नी और सन्तान आदि कहते हो और जिनकी गुलामी में फंसे हुए हो, वह तुम्हारे नहीं है, एक दिन तुम उन से जुदा हो जाओगे; और जिसे तुम अपनी ज़मीन, जायदाद और अपना रुपया कहते हो, एक दिन वह तुम्हारा न रहेगा। तब तुम उनके पीछे क्यों कर जाते हो? तुम काहे के लिए उनके अनुरागी बनकर अपने आत्मा के भीतर अन्धकार को दिनों दिन बढ़ाते जाते हो? तुम्हारे भीतर यह सच्चा विश्वास पैदा होना चाहिए, कि सच्चे धर्म की राह पर जाने में मुझे नेचर की ओर से ज़रूर गुप्त सहायता मिलेगी और यदि मैं सत्य धर्म को मुख्य रखूंगा, तो देवात्मा की भी सच्चे मदद मुझे प्राप्त होगी। ऐ समाज के लोगों! सच्चाई और हित के राज के लाने के लिए कुछ त्याग और कुछ अर्पण करना सीखो, अपनी जायदाद, अपनी सन्तान, अपना समय, अपना शरीर, अपना दिमाग़ अर्पण करो। यदि नहीं करोगे, तो यह सब कुछ तो तुम्हारे हाथ से एक दिन चला जाएगा, लेकिन साथ ही इससे तुम्हारा आत्मा भी दिनों दिन पतित होता जाएगा, और तुम हर तरह से घाटे में रहोगे। ऐसा हो कि देवात्मा की देव ज्योति तुम्हें इस सत्य को दिखा सके और उनके देव तेज से तुम्हारा कठोर और पतित हृदय बदल सके, और तुम इस मूल यज्ञ के साधनों से कुछ सच्चा लाभ उठा सको, कि जो आज से देवात्मा के सम्बन्ध में आरम्भ होते हैं।

भगवान् देवात्मा का रक्षाकरी और जीवन दाता सम्बन्ध!

मुझे इस विचार से अपने सौभाग्य की कोई सीमा बोध नहीं होती, कि मैं घोर आत्म अन्धकार में ठोकरें खाता हुआ अपने बहुत बड़े हितकारी भाई(श्रीमान् देवत्व सिंह जी) के द्वारा आत्मिक जगत् के देव सूर्य्य भगवान् देवात्मा की शरण में आ गया, और उनका सेवक और देव समाज का सभासद बन कर और इन्हीं हितकारी भाई के नाना प्रकार के अनथक संग्रामों के द्वारा वर्षों तक भगवान् देवात्मा के देव प्रभावों को पाते रहकर एक ओर रक्षाकारी और जीवन दायक देव प्रभावों की क़ीमत और ज़रूरत को अपने और दूसरों के लिए एक हद तक बोध करने लग गया, और दूसरी ओर देव प्रभावों को उनके दाता के साथ प्रति दिन योग करके और कभी २ उनके ही उत्पन्न किए हुए देव प्रभाव दायक मंडल में पहुंचकर भी पाने का आकांक्षी और अभ्यासी बन गया और भगवान् देवात्मा की देव ज्योति में यह सत्य भी देखने लग गया, कि जीवन नाशक प्रभावों में रहकर और ग्रहण करके प्रत्येक मनुष्यात्मा की मृत्यु है, और रक्षाकारी और जीवन दायक देव प्रभावों के मंडल में रहकर और उन्हें ग्रहण करके आत्मा की उस की योग्यता के अनुसार रक्षा और उन्नति होती है। इसलिए क्या मेरे लिए और क्या अन्य प्रत्येक अधिकारी मनुष्यात्मा के लिए भगवान् देवात्मा का सम्बन्ध रक्षाकारी और जीवन दायक सम्बन्ध है।

आज प्रात: काल निज का धर्म साधन करते समय जब मैंने पूजनीय भगवान् की निम्न लिखित देव वाणी का पाठ किया :-

देवात्मा की देव वाणी

"परिवर्तन विषयक अटल नियम वा शक्ति के कार्य से प्रत्येक जीवित और अजीवित अस्तित्व से असंख्य अदृश्य कणे निकल 2 कर धूएं की न्याईं चारों और आकाश में फैलते रहते हैं, और वह अपनी भली वा बुरी अवस्था के अनुसार उन सब अस्तित्त्वों को कि जो उन्हें खैंचने और ग्रहण करने की योग्यता रखते हैं, भले वा बुरे रूप में बदलते रहते हैं। अर्थात् उन्हें अपने भले वा बुरे प्रभावों के द्वारा अपेक्षाकृत भला वा बुरा बनाते रहते हैं, इसीलिए औरों के दूर वा निकट के प्रभावों को भी अज्ञात रूप से ग्रहण करके नाना प्रकार के मनुष्य अपनी अवस्था के अनुसार अपने भीतर श्रेष्ट वा अश्रेष्ट, भला वा बुरा, हितकर वा हानिकारक, सुख दायक वा कष्ट दायक परिवर्तन लाभ करते हैं।

इस अमूल्य तत्व को जानकर प्रत्येक ऐसे जन के लिए, कि जिस के भीतर अपने अस्तित्त्व की बुरे वा हानिकारक प्रभावों से रक्षा करने और भले प्रभावों के लाभ करने की कुछ भी आकांक्षा जाग्रत हो चुकी हो, नितान्त आवश्यक है, कि वह एक ओर, जहां तक सम्भव हो, ऐसे सब प्रकार के अजीवित और जीवित अस्तित्त्वों के नीच गति दायक वा बुरे वा हानिकारक प्रभावों से किसी उचित और सच्ची विधि के द्वारा अपनी रक्षा करे, और दूसरी ओर उसे जहां कहीं उच्च गति दायक वा भले और हितकर प्रभाव प्राप्त हो सकते हों, उनके लाभ करने और उन में रहने के लिए सदा चेष्टा करे, और पहलों के कुसंग से बचकर दूसरों के सुसंग के द्वारा अपना शुभ साधन करे।"

तब मेरे सामने भगवान् देवात्मा की देव ज्योति में एक नया और हितकर जगत् प्रकाशित हुआ। और मैंने साफ़ बोध किया, कि कोई भी जन मनुष्यात्मा होकर एक ओर अपने शारीरिक और अहं सम्बन्धी और अन्य नाना प्रकार के नीच सुख अनुरागों और उनसे उत्पन्न नाना प्रकार की नीच घृणाओं का दास होकर और दूसरी ओर आत्मिक सत्य ज्ञान और उच्च धर्म भावों से वंचित रहकर जहां खुद अपने भीतर से बुरे और महा हानिकार प्रभावों को चारों ओर फैलाने और दूसरों के बुरे और महा हानिकारक प्रभावों को खैंचने वा ग्रहण करने और अपने भीतर बुरा और हानिकारक परिवर्तन लाभ करने के लिए लाचार है, वहां भले वा हितकर प्रभावों को फैलाने और पाने के भी अयोग्य है। मैंने देखा कि सारा मनुष्य जगत् ही आत्मा के रूप और उसके जीवन के विषय में नाना तत्वों वा सत्यों, जीवन नाशक और जीवन दायक प्रभावों अथवा ध्वंसकारी और विकासकारी प्रभावों, आत्म घातक गतियों और जीवन रक्षक और जीवन विकासक गतियों के विषय में सत्य ज्ञान लाभ करने के विचार से आत्म तिमर नाशक और आत्म रूप प्रकाशक **देवज्योति** और उपरोक्त अन्धता और अबोधता की अत्यन्त कृपा पात्र अवस्था के लिए उच्च घृणा और उच्च दु:ख और उच्चभाव वा उच्च राग उत्पादक **देवतेज** से वंचित है, इसलिए मनुष्य का क्या अपने जगत् के नाना मनुष्यों के साथ और क्या नीचे के जगतों के नाना अस्तित्त्वों के साथ जैसा कुछ महा हानिकार, महा दुखदाई और मृत्यु दायक सम्बन्ध बना हुआ है, उनका भयंकर दृश्य घर 2, नगर 2 और शहर 2 देखने में आ रहा है। मनुष्यों के पास धन की कमी नहीं, कला कौशल की कमी नहीं, कितने देशों को अपना राज्य भी प्राप्त है, प्रत्येक देश में धर्म के नाम से कहलाने वाले मज़हबों की भी भरमार है, मन्दिर है, मस्जिदें और गिरजे है, गुरूद्वारे और ठाकरद्वारे आदि भी जगह 2 न केवल मामूली क़ीमत के, किन्तु कई एक हज़ारों और लाखों की क़ीमत के बने हुए हैं,

आजकल करोड़ों उन में धर्म्म के नाम से प्रति दिन पूजा पाठ और कथा कीर्तन, सन्ध्या और नमाज़ की भरमार पाई जाती है, उस के लिए त्याग और समपर्ण भी बहुत किया जा रहा है, परन्तु शोक और महा शोक! कि नीच सुख अनुराग और नीच घृणा शक्तियों के दास्तव और उपरोक्त दोनों प्रकार की शक्तियों अर्थात् अति विलक्षण **देव ज्योति** और महा बली **देव तेज** के अभाव के कारण न केवल धर्म जगत् में किसी का प्रवेश ही नहीं हुआ है, किन्तु परस्पर की हानि करते जाकर मृत्यु के राही बने हुए हैं, और भीतर की भूतनी शक्तियों के द्वारा ज़िन्दा जहंनुम फैला रहे हैं। यदि कुछ विरले मनुष्य किसी भले भाव से किसी सम्बन्ध में हितकर गति करके कुछ सेवाकारी वा सुखदाई बनते भी है, तो अन्य नाना अङ्गों में हानि, दुख और बरबादी अधिक लाने का हेतु बन रहे हैं। मनुष्यों की बरबादी के उपरोक्त कारणों को दूर करने और **आत्म तिमर नाशक और आत्म रूप प्रकाशक देव ज्योति और उच्च घृणा और उच्च राग उत्पादक देव तेज** का दान देकर इस कुल नारकीय लीला को नष्ट करने और इस पृथ्वी को नया और श्रेष्ट रूप देने के लिए आत्म लोकी देव सूर्य भगवान् देवात्मा का अद्वितीय आविर्भाव हुआ है, और उन्होंने ही अपनी अलौकिक देव शक्तियों अर्थात् सत्य और शुभ के प्रति पूर्णाङ्ग अनुराग और मिथ्या और अशुभ के प्रति पूर्णाङ्ग देव घृणा शक्तियों में विकसित होकर कुल जगत् के उद्धार और सर्वोच्च कल्याण का बीड़ा उठाया है, और अपने जीवन दायक और उच्च परिवर्तनकारी देव प्रभावों को फैलाकर मिथ्या शिक्षा, मिथ्या पूजा, पाठ, मिथ्या साधनों, मिथ्या अनुष्ठानों आदि को नष्ट करके सत्य धर्म की नचेर सम्मत शिक्षा देनी आरम्भ की है। और सम्बन्धों से सब प्रकार का दुराचार, पापाचार, अत्याचार और अमिताचार दूर करके उन्हें परस्पर के लिए सेवाकारी, सदाचारी, विश्वास का पात्र, कर्तव्य परायण और शिष्टाचारी बनाना शुरू किया है। भगवान् देवात्मा के देव प्रभावों से मुझ महा नीच और अबोधी को अपनी और पर हानि के विषय में नाना अंङ्गों में बोधी बनाकर मेरी रक्षा करनी आरम्भ की है, आत्म हित और परहित आकांक्षी बनाकर और नाना अंङ्गों और सम्बन्धों में हितकर गतियों में लगाकर मेरे जीवन में शुभकर वा हितकर परिवर्तन लाना शुरू किया है। भगवान् देवात्मा मेरे भिन्न अन्य शत २ और सहस्त्र २ नर नारियों के जीवन में भी ऐसा महा हितकर परिवर्तन लाने का अनोखा कार्य कर रहे हैं, इसलिए निश्चय एक मात्र भगवान् देवात्मा का सम्बन्ध ही रक्षाकारी और जीवन दाता सम्बन्ध है। क्या मैं ही ऐसा बोध करता हूं? नहीं, और भी कसरत से स्त्री पुरुष जो मुझ से बहुत बेहतर योग्यता रखते हैं, वह और भी अधिक उज्जवल रूप से देवात्मा के देवरूप और उन के अनोखे और महा बली देव प्रभावों की क़ीमत और ज़रूरत को बोध करते हैं और देवात्मा के रक्षाकारी और जीवन दाता सम्बन्ध को अपने और अपने सम्बन्धियों के लिए असल ठिकाना, हां, जान और प्राण का सम्बन्धी बोध करते हैं। औरों को छोड़ कर मैं अपने हितकारी भाई विशेष सन्मान् के योग्य श्रीमान् देवत्व सिंह जी की ही हृदय स्पर्शीय कथा उन के अपने शब्दों में नीचे दर्ज करता हूं, ताकि पाठक मण उस के पाठ से अपना अधिक से अधिक शुभ साधन कर सकें।

श्रीमान् जी लिखते हैं :-

"मैंने मिथ्या और अहित वा पाप मूलक गतियां करने और उन से अपने आत्मा को विकार युक्त बनाने और अपने हित और विकास का मार्ग बन्द करने में कोई कमी नहीं रहने दी, इतनी आत्म घातक और जीवन नाशक गतियां करके भी मैं जो अभी तक धर्म के प्राण के विचार से अर्थात् भगवान् देवात्मा की जीवन दायनी ज्योति और शक्ति के

प्रभावों की क़ीमत को उपलब्ध करके उन्हें लाभ करने की आकांक्षा के विचार से जीता जागता दिखाई देता हूं, उसका बहुत बड़ा कारण यह है, कि मेरी उपरोक्त जीवन नाशक गतियों के साथ 2 जीवन दाता भगवान् देवात्मा की ओर से जीवन रक्षक और जीवन संचारक देव प्रभावों को मुझ तक पहुंचाने का संग्राम निरन्तर रूप से जारी रहा है, और जैसे एक 2 बच्चे की ओर से अपने शरीर को मैला और गन्दा बनाने और रखने के लिए सारा ज़ोर लगाने पर भी उस की माता उसे साफ़ और सुथरा रखने और साफ़ और सुन्दर कपड़े पहनाने का यत्न जारी रखकर उसे सुन्दर और सुसज्जित हालत में रखने में कामयाब देखी जाती है, ठीक वैसे ही मुझ मिथ्या और अहित वा पाप परायण वजूद की भगवान् देवात्मा ने, मेरी ओर से अपने आत्मा के नाश के लिए सिरतोड़ कोशिशें होने पर भी, मेरे आत्मा की न केवल विनाश से रक्षा की है, किन्तु अन्धकार ग्रस्त और उच्च बोध विहीन अवस्था से निकाल कर मुझे अपनी देव ज्योति दान दी है। और कितने ही अङ्गों में मेरे भीतर मेरी रक्षा के लिए अमूल्य और अत्यन्त आवश्यक उच्च बोध पैदा कर दिए है, उन में से कई एक रक्षाकारी बोध ऐसे भी हैं, कि जन की सहायता से अब मैं नाना प्रकार की कितनी ही ऐसी विनाशकारी गतियां करने से अपने आप को रोक लेता हूं, कि जिन के विषय में पहले मैं कोई बोध नहीं रखता था, और न ही मैं उन के करने से अपने आप को रोकने की कोई आकांक्षा वा सामर्थ्य रखता था। उन उच्च बोधों की प्राप्ति से पहले मुझे कोई पता न था, कि मैंने अपने किस सम्बन्ध में क्या २ नीच गतियां करके अपने किस 2 सम्बन्धी और अपने जीवन के किस 2 अङ्ग को क्या 2 हानि पहुंचाई है, इसलिए उस अवस्था में मुझे न कभी अपने उन महा दुष्ट और नारकीय कर्मों के लिए कोई शोक और दुःख हुआ था, और न ही कभी उनके परिशोध के लिए आकांक्षा पैदा हुई थी। और इसी लिए उस समय मैंने न कभी अपने विकारों को धोने और मैल से शुद्धि लाभ करने का कोई साधन किया था। अब भगवान् देवात्मा की अपार कृपा और लम्बे काल के घोर संग्रामों से एक और उन की अमूल्य, विचित्र और महा हितकर देव ज्योति की किरणें मेरे भीतर प्रवेश करने से मुझे अपने विविध सम्बन्धों में अपनी नाना नीच और महा हानिकारक गतियां निहायत बुरे और घृणित रूप में दिखाई देती हैं और उन्हें देख 2 कर मुझे बहुत दुःख और शोक होता है। और दूसरी ओर उन के देव तेज की मोक्ष दायक किरणें मुझ तक पहुंच कर मेरा नाना नीच गतियों से उद्धार करने और उन के विकारों से मुझे शुद्ध बनाने का काम कर रही हैं। मैं साफ़ देखता हूं, कि मैं जिस एक 2 चिन्ता वा क्रिया को करके उसे नीच और बुरा देखने की कोई आंख और उस से रुकने की कोई आकांक्षा वा सामर्थ्य नहीं रखता था, और इस लिए खुशी 2 और चाह कर ऐसी एक 2 चिन्ता वा क्रिया में प्रवृत हो जाता था, एक समय आया, कि भगवान् देवात्मा की अपार कृपा से मुझे अपनी वह चिन्ता और क्रिया नीच और बुरी बोध होने लगी। ऐसे अदभुत और मेरे लिए महा हितकर बोध के जाग्रत होने पर मेरे भीतर यह इच्छा पैदा हुई, कि मैं ऐसी चिन्ता वा क्रिया न करूं। परन्तु मुझ से वह चिन्ता वा क्रिया कराने वाली शक्ति की तुलना में मेरी उपरोक्त इच्छा बहुत दुर्बल थी, इसलिए मेरी उस इच्छा शक्ति की कोई पेश नहीं जाती थी, और मैं वैसी ही चिन्ता और क्रिया करने से रुक नहीं सकता था। मेरी अवस्था सचमुच उस क़ैदी की न्याईं थी, कि जो यद्यपि दिल से यही चाहता है, कि मैं जेलख़ाने में न जाऊं, परन्तु पुलिस के सिपाही उसे घसीट कर जेलख़ाने में पहुंचा ही देते है और वह बेचारा विवश उनके हवाले हुआ 2 जेलख़ाने में पहुंच ही जाता है। एक काल तक मेरा यही हाल रहा, और मैं न चाहकर भी विनाशकारी गतियां करता रहा। मुझे

अच्छी तरह याद है, कि एक 2 बार मैंने एक 2 सम्बन्ध में विनाशकारी गति करके पीछे से उस की उसी प्रकार तकलीफ़ और जलन अनुभव की है, कि जैसे आग में हाथ पड़ जाने से उस की तकलीफ़ और जलन अनुभव होती है। और उसके लिए मैंने अपने आप को बार 2 फिटकारा और यही प्रण किया है, कि मैं फिर ऐसा नहीं करूंगा, परन्तु मेरा वह सब रोना धोना और प्रण करना कुछ काम नहीं देता था। नीच गतियां कराने वाली मेरे भीतर की नीच शक्तियां बहुत बढ़ी हुई थीं, मुक़ाबिला करने के लिए भगवान् देवात्मा से बल लाभ करने का मैं कोई ऐसा साधन नहीं करता था, कि जिससे मैं अपनी चिन्ता शक्ति वा शारीरिक अंङ्गों पर काबू पाकर उन्हें वह गतियां करने से रोक दूं, बीच 2 में अपने निज के साधनों अथवा सम्मिलित साधनों, विशेष कर व्रतों और उत्सवों के अवसरों पर, भगवान् देवात्मा के देव प्रभावों की ज़ोरदार रौ के चलने पर जब मेरे भीतर अपनी उपरोक्त नीच गतियों के सम्बन्ध में उच्च जाग्रति पैदा होती, तब मैं उन की महाभयानक छवि को देखकर बहुत दुःखी होता, और पछताता और ऐसी प्रतिज्ञायें करता, कि आगे को ऐसी महा हानिकारक गतियां कभी नहीं करूंगा। परन्तु जब ही कोई आज़मायश का समय आता, तब ही मैं गिर जाता। अपनी प्रतिज्ञाओं पर स्थिर न रह सकता और वैसी ही गतियां करने के लिए मजबूर हो जाता। किसी के शरीर में आग से झुलसे जाने से जैसे बहुत से ज़ख़्म हो जाएं और वह ज़ख़्म अभी राज़ी न होने पावें और नए अन्य ज़ख़्म हो जावें, तो उस जन की जैसी कृपा पात्र अवस्था होती है, सचमुच वैसा ही मेरा हाल था। मैं ऐसा अनुभव करता था, जैसे आत्मा के कई ज़ख़्म में पीप पड़ गई है, और बार 2 नीच चिन्ता करने से मेरे उन ज़ख़्मों में पीप बह रही है, परन्तु उन ज़ख़्म के बहने का क्रम बन्द कर देना मेरी सामर्थ्य में नहीं था, किन्तु उलटा मेरे भीतर ऐसी शक्तियों का प्रबल अधिकार वर्तमान था, कि जो मेरे न चाहने पर भी मुझ से वह गतियां करा लेती थी, कि जिस से मेरे ज़ख़्म से पीप बहे, और मेरे ज़ख़्म बढ़ें। ऐसी सूरत में मेरे बचने की कोई सम्भावना न थी, और मैं बिलकुल तबाह हो जाता, यदि भगवान् देवात्मा स्वयं विशेष कृपा करके मुझे न बचाते। मेरे सौभाग्य से अगस्त सन् 1905 ई० से पूजनीय भगवान् ने धर्म विकासालय खोल दिया। भगवान् देवात्मा ने धर्म विकासालय क्या खोला, यह कहना चाहिए, कि मेरे जैसे आत्मिक रोगियों के लिए आत्मिक हस्पताल खोल दिया। धर्म विकासालय की जिन सभाओं में भगवान् देवात्मा की ज्योति और शक्ति विशेष रूप से और नियमित रूप से काम करती थी, उन सभाओं में नियमित रूप से मुझे लगातार वर्षों तक योग देने का महा सौभाग्य प्राप्त हुआ। उन में योग देकर भगवान् देवात्मा की देव ज्योति और देव तेज के लगातार कार्य से क्या कुछ आश्चर्य जनक उच्च परिवर्तन मेरे आत्मा में पैदा हुआ, किस प्रकार वर्षों पहले की मेरी नीच गतियां मेरे सामने आकर मुझे दुखी और बेचैन करने लगीं, किस प्रकार मैं उनका परिशोध करने के लिए मजबूर हुआ, उस के लिए मैंने क्या २ साधन किए, पूजनीय भगवान् के सम्बन्ध में दूरी का बोध होने पर मैंने उसे दूर करने के लिए क्या २ यत्न किए, और उन हानि परिशोध सम्बन्धी और श्रद्धा और अनुराग उत्पादक साधनों के चलाने में मुझे क्या २ दिक्क़तें पेश आई, वह सारा हाल जहां एक ओर बहुत दिलचस्प है, वहां दूसरी ओर वह बहुत शिक्षा प्रद भी है। मैं यह कामना करता हूं, कि मेरे भीतर उच्च परिवर्तन की इस कथा का पाठ मेरे साथी सेवकों और अन्य अधिकारी जनों के लिए लाभ दायक प्रमाणित हो।"

वाह! भगवान् देवात्मा के रक्षाकारी और जीवन दाता सम्बन्ध का कैसा अति विचित्र और महा हितकर कार्य!!

एक दिल को छू लेने वाला दृश्य

परम पूजनीय भगवान देवात्मा के ज्येष्ठ पुत्र, विशेष सन्मान के योग्य श्रीमान पंडित हरनारायण अग्निहोत्री जी ने तर आंखों और भरे दिल के साथ ब्यान किया कि श्रीमान मुरलीधर जी ने पूजनीय देवशास्त्र में से जिन आदेशों का पाठ किया है, वह तो इस माता-पिता सन्तान के रिश्ते के सम्बन्ध में भगवान देवात्मा के देवरूप की कागज पर तस्वीर है। परन्तु आज अभी उनके श्रीचरणों में बैठकर और माता पिता सन्तान व्रत का साधन करके जो हम दोनों भाई परिवार समेत आ रहे हैं, इस साधन में भगवान ने अपने माननीय माता पिता के सम्बन्ध में अपने जिन भावों का प्रकाश फरमाया है, इससे उनके सुन्दर देवरूप के साक्षात दर्शन करने का मुझे आज एक और अमूल्य अवसर मिला है और उसकी तुलना में अपनी तस्वीर बहुत तुच्छ और रद्दी अनुभव हुई है।

भगवान ने फरमाया कि उनके भीतर बचपन से ही अपने माता पिता के सम्बन्ध में दो भाव वर्तमान थे। अर्थात प्रथम उन्हें माता पिता अपने से बड़े अनुभव होते थे और इसीलिये उन्हें सन्मान देने और उनके सामने झुकने को स्वभावत: जी चाहता था और उनका सम्मान करके तृप्ति मिलती थी और द्वितीय वह उपकारी होने के कारण प्यारे मालूम होते थे और उनके निकट जाने और उनकी सेवा करने को जी चाहता था और कभी किसी बात पर उनकी रोक टोक से भी दूरी नहीं पैदा होती थी। उनके सम्बन्ध में शुद्ध सन्मान और कृतज्ञता का भाव होने के कारण क्या उनकी वर्तमानता में और क्या उनके पीछे भगवान उन्हे दिल से सम्मान देते थे और उनसे एक या दूसरे काम के करने के विषय में आज्ञा मिलने पर दिल में बुड़बुड़ाने की बजाए उसमें खुशी और तृप्ति अनुभव करते थे और फिर आयु के बढ़ने के साथ साथ उनके इस सम्मान, आकर्षण और कृतज्ञता के भावों में कमी नहीं आई बल्कि लगातार अभ्यास से वह बढ़ते चले गए। यही कारण है कि जब अपना जीवन व्रत ग्रहण करने के पश्चात भगवान अपनी भगवीं पोशाक में एक बार अकबरपुर तशरीफ ले गए तब घर में पहुंचने पर जब माता जी उन्हें मिलने के लिये आगे बढ़ी तो उनका उपकारी रूप भगवान को इतना महान महसूस हुआ कि वह मिट्टी के फर्श पर ही शाष्टांग लेट कर और उनके चरणों में अपना सिर रखकर उन्हें प्रणाम करने के लिये मजबूर हो गये और सफाई के बहुत तीव्र और उच्च भाव रखकर भी उन्होंने इस बात की कुछ परवाह न की कि इससे कपड़े मिट्टी में खराब हो जायेंगे, न ही उनके सामने यह आया कि मां अनपढ़ है, हम बहुत पढ़े लिखें हैं और न ही अपने आत्मिक पद का ख्याल आया। आज सुबह यह हालात सुनाते समय भगवान के हृदय में उच्च भाव ऐसा जोश मारने लगे कि वह विवश फूट-फूट कर रोने लग गए। यह बयान करते हुए श्री पंडित जी का दिल भर आया और वह भी फूट पड़े, उनका गला रुक गया और उसके बाद का उनका सारा बयान तर आंखों के साथ बहुत ही प्रभावशाली था।

श्री पंडित जी ने बयान किया कि अपने देवात्मा पिता के जीवन के इस दृश्य को शब्दों में बयान करना कठिन है। मेरे सामने आया कि भगवान की आयु 75 साल की हो चुकी है, वह अपने पद के विचार से सारे मनुष्य जगत के सच्चे उपास्यदेव है। परन्तु फिर भी अपनी उपकारी माता जी की तस्वीर सामने आने से इस तरह बिलक-बिलक कर उनके सम्बन्ध में अपने भावों का प्रकाश कर रहे हैं जो जाहिर करता है कि उनके देव हृदय में अपने माता पिता के सम्बन्ध में श्रद्धा और सम्मान का भाव कैसे जोरदार और सुन्दर रूप में वर्तमान है।

भगवान की तुलना में उनके सम्बन्ध में अपनी अत्यन्त ही घटिया हालात का उस समय मुझे विशेष रूप से बोध हुआ और उसके लिये दिल दुख और शर्मसारी से भर गया।

इसी सिलसिले में श्री पंडित जी ने बयान किया कि कितने ही विरोधी लोग भगवान को घमंडी बताते हैं। यह ऐसे जनों की गलतफहमी और भगवान के सम्बन्ध में सख्त बेइंसाफी है वरना जिस देवात्मा का हृदय ऐसा नरम और नम्र हो, वह घमंडी कैसे हो सकते हैं? भगवान के जीवन के जिस प्रकाश को विरोधी लोग घमंड से सम्बन्धित करते हैं वह वास्तव में उनके देव रूप का बहुत सुन्दर प्रकाश है क्योंकि भगवान अपने देवरूप की विशेषता के सम्बन्ध में जिन सच्चाईयों को देखते हैं, उन्हें बगैर किसी झिझक के ऐसा ही साफ शब्दों में बयान फरमाते हैं, और वह जिस बात की सच्चाई और भलाई पर निर्भर महसूस करते हैं उस पर अपने सत्य और हित अनुराग की चट्टान की तरह मजबूती से कायम रहते हैं और दुनियां की कोई ताकत उन्हें वहां से इधर-उधर नहीं कर सकती। उनके इस श्रेष्टतम गुणों को विरोधी लोग अपनी भ्रान्ति या पक्षपात को उनका घमंड बताते हैं कि जो किसी भी तरह उचित नहीं है जो लोग भगवान के निकट रहते हैं, वह भली भान्ति जानते हैं कि एक एक समय अपने विरोधियों के एक एक गुण को भी भगवान किस तरह दिली जोश से बयान करते हैं और सराहते हैं यद्यपि घमंडी जन का दूसरों के गुण वर्णन करने से और विशेष कर किसी विरोधी के गुण वर्णनं करने से गला रुक जाता है।

फिर भगवान प्राय: 55 साल के लम्बे समय से जब से उन्हें उनके गुरू ने यह उपदेश दिया कि माता पिता के लिये शुभकामना किया करो, तब से लेकर आज तक हर रोज अपने साधन में माता पिता को याद करे उनके सम्बन्ध में न केवल अपनी श्रद्धा और सम्मान का प्रकाश करते रहे हैं, बल्कि अपने दिल से निकली हुई मंगल कामना की जोरदार लहर उन तक पहुंचाकर उनका आत्मिक हित करने का विशेष यत्न करते रहे हैं और इस काल में कोई एक दिन भी ऐसा नहीं गुजरा कि जिसमें भगवान ने अपने माता पिता को याद न किया हो। इसकी तुलना में हमारी अपनी अवस्था ऐसी घटिया है कि न केवल हम प्रतिदिन उनके उपकारों को स्मरण करके सच्चा साधन नहीं करते बल्कि कई बार अपनी अनुचित क्रियाओं से उनके लिए बहुत आघातकारी प्रमाणित होते हैं।

माता-पिता को छोड़कर अपनी संतान के सम्बन्ध में भी भगवान का जीवन आदर्श जीवन हैं उन्होंने हमारे आत्मिक हित के लिए जिस कदर संग्राम किया है, वह सचमुच अद्वितीय है हम लोगों ने एक एक समय अपनी अयोग्यता से उनका साथ नहीं दिया या उनके संग्रामों से जिस कदर लाभ उठाना चाहिए था नहीं उठाया। यह हमारी नालायकी है वरना उनकी ओर से हमारे भले के लिये जो संग्राम हुआ है और अब भी होता है, वह पूर्णत: विशेष है। बेशक हमारे कई अभागे भाई बहन उनसे कट गये और उन्होंने सख्त आत्मिक हानि उठाई और कई अब भी उठा रहे हैं परन्तु उसका यह कारण कदापि नहीं है कि भगवान की ओर से उनकी भलाई की कोशिश में कुछ कमी रही है। भगवान तो इस कदर महान हैं कि ऐसी नालायक संतान से सख्त आघात पाकर भी अब तक उनके हित के लिए शुभ कामनाएं करते हैं।

आज भगवान ने अपने माता पिता के सम्बन्ध में जो बयान फरमाया है, उसने मुझे उठाकर इस नए लोक में पहुंचा दिया है। उनके सम्बन्ध में अपनी घटिया हालत विशेष रूप से महसूस होती रही है और उसमें बेहतरी लाने के लिये बहुत बल मिला है और इसी भाव से मैंने बयान कर देना आवश्यक समझा है

कि उनके और सेवकों को भी एक ओर भगवान के महान रूप के दर्शन करने का अवसर मिल सके और दूसरी ओर माता पिता के सम्बन्ध में अपनी अवस्था उनके सामने आ सके।

श्री पंडित जी के बयान से इस सभा में जैसा उच्च मंडल पैदा हो गया, उसका शब्दों में बयान करना कठिन है। उस समय एक एक जन भगवान के अपने माता पिता के सम्बन्ध में श्रद्धा और सम्मान के विशेष भावों की लहर से प्रभावित होकर फूट-फटकर रो रहा था और कितनों की आंखों से आंसू बह रहे थे और बहुत से उपस्थित जन भगवान देवात्मा के श्रीचरणों में झुक रहे थे कि जो इस दुनियां में ऐसे बिल्कुल निराले और पूर्णत: विशेष दृश्य पैदा कर रहे हैं।

श्री पंडित जी के बयान के पश्चात उनके छोटे भाई श्रीमान पंडित कांति नारायण जी अग्निहोत्री जी खड़े हुए। उन्होंने भी भगवान के उपदेश का भरे दिल से जिकर करके जिन कई आवश्यक बातों की ओर उपस्थित जनों का ध्यान फेरा, वे मुख्य बातें यह थीं-

1. कुछ दिन पहले भगवान ने यह फरमाया था कि आज कल के कुछ कुछ नौजवान यह कहा करते हैं कि माता पिता के हम पर कौन से उपकार हैं? उन्होंने अपने स्वार्थ को लेकर ही हमें जन्म दिया है और पाला है परन्तु क्या उन्हें और क्या और सबको इस सत्य की उपलब्धि की आवश्यकता है कि किसी जन ने हमें जो ऋण दिया हो चाहे वह ऋण किसी उपकार भाव से नहीं बल्कि अपने नीच स्वार्थ को सामने रखकर दिया हो, हां चाहे उसने अपने पास से नहीं बल्कि किसी और से ऋण लेकर दिया हो, तब भी वह ऋण ऋण ही रहता है और ईमानदार होकर हमारा यह कर्तव्य हो जाता है कि हम उस ऋण को ब्याज समेत वापस करे। इसी प्रकार चाहे बहुत से माता पिता अपनी सन्तान को जन्म देने और उनकी पालना और शिक्षा देने में नि:स्वार्थ हितभाव से परिचालित न होते हों और अपनी नीच इच्छाओं और नीच स्वार्थ से परिचालित होकर उनकी रक्षा पालना और सेवा करते हों परन्तु संतान के लिए वह जो कुछ करते हैं उनका वह उपकार, उपकार ही रहता है और आज्ञाकारी संतान का यह कर्तव्य है कि वह उनके उपकारों को अपने ऊपर ऋण की न्याई महसूस करे और कृतज्ञता के भाव से भर कर उस ऋण को उतारने का यत्न करे। कितने ही माता पिता यह समझते हैं कि उन्होंने जो अपनी संतान को पाल पोस कर बड़ा कर दिया और उसे पढ़ा लिखाकर अपनी कमाई स्वयं करने के योग्य बना दिया, अब वह अच्छी डिग्री प्राप्त है, नाम और इज्जत प्राप्त है, उसकी सैंकड़ों और हज़ारों रुपए की आमदनी है और उसकी संतान अच्छा खाती पीती और कोठियों में रहती है, तब हम अपने कर्तव्य से मुक्त हो गए हैं परन्तु यह उनकी सब गलत है। भगवान की रोशनी यह दिखाती है कि उन सबसे बढ़कर और आवश्यक अंग यह है कि माता पिता अपनी संतान की आत्मिक भलाई के लिए फिकर करें और वह उन्हें उच्च चरित्र में ढालने का यत्न करें और उस उद्देश्य के लिए वह उन्हें देवात्मा जैसे अद्वितीय आर्विभाव और देव समाज जैसी अद्वितीय समाज के साथ जोड़ें। देव समाज के अन्दर जो माता पिता ऐसा नहीं करते, वह समझें कि वह अपनी संतान के सम्बन्ध में अधूरे तौर पर अपना कर्तव्य पूरा कर रहे हैं। हम लोगों में से जिन जिन को माता पिता होने का अधिकार प्राप्त है काश! कि वह आज के विशेष दिन में भगवान की रोशनी में अपनी संतान के सम्बन्ध में अपनी आत्मिक अवस्था की पड़ताल कर सकें।

(जीवन तत्व 12 जनवरी, 1926
मार्च 2019)

प्रत्येक अधिकारी मनुष्य अपने आत्मिक कल्याण के निमित्त सदा के लिए भगवान् देवात्मा का मुहताज है।

(लेखक श्रीमान् पी० वी० कनल एम०ए०एल एल०बी० कर्मचारी देव समाज)

मैं इस से पहले बता चुका हूँ, कि मनुष्यात्मा सारे के सारे ही सुखार्थी है। मनुष्यात्माओं की यह सुखार्थी प्रकृति प्रत्येक मनुष्य की आत्मा के सम्बन्ध में अबोधी और अन्धा रखती है और नीच अनुरागों और नीच घृणाओं को पैदा करके आत्मा के भीतर उल्टी दृष्टि पैदा कर देती है। इस उलटी दृष्टि के कारण ऐसा उल्टा दृष्टा सत्य को मिथ्या देखने लगता है, और मिथ्या को सत्य; भलाई को बुराई देखने लगता है, और बुराई को भलाई। यह उलटी दृष्टि अपने दास के लिए यह असम्भव कर देती है, कि वह अपना आत्म हित चाहे और करे। यह अवस्था बहुत कृपा पात्र है। और यह कृपा पात्र अवस्था मनुष्य को सदा के लिए ऐसे आत्मिक चिकित्सक का मुहताज कर देती है, कि जो देव ज्योति और देव तेज दाता हो। देव ज्योति को पाने से ही ऐसा अन्धा और अज्ञानी परन्तु अधिकारी जन अपनी प्रकृत आत्मिक अवस्था का ज्ञान लाभ कर सकता है। अपनी असल आत्मिक अवस्था का ज्ञान पाना मनुष्य का महा उच्च अधिकार है। यह महा उच्च अधिकार नेचर ने मनुष्य के लिए ही रक्खा है, ओर किसी जीवधारी के लिए नहीं, परन्तु यह महोच्च अधिकार मनुष्य तब ही सफल कर सकता है, जब उसे देव ज्योति प्राप्त हो। अन्यथा नहीं।

बेशक मनुष्य के लिए अपनी प्रकृत आत्मिक अवस्था के विषय में सत्य ज्ञान लाभ करना सब से आवश्यक और परम हितकर है और वह अपनी प्रकृत आत्मिक अवस्था से अन्धा और अज्ञानी रहकर अपने लिए बहुत बड़ी मुसीबतें सहेड़ लेता है, परन्तु अन्य कई पहलुओं में भी उसके लिए अपनी प्रकृत अवस्था के विषय में सत्य ज्ञान लाभ करना आवश्यक है, और उस से अज्ञानी रहकर वह नाना प्रकार से हानि और दुख उठाता है। एक बार का ज़िकर है, कि एक बहुत अच्छे दौलत मन्द ख़ानदान का एक ही नौनिहाल जो तैरना जानता था, वह डूबकर मर गया। उस के मरने का कारण यह था, कि और नव युवकों के साथ वह दरिया पर गया हुआ था, और जब वह पांच छह नव युवक कपड़े उतार कर दरिया में तैरने के लिए गए, तब वापिस में यह शर्त लगादी, कि कौन सब से अधिक डुबकी लगाकर पानी के अन्दर रह सकता है। दो तीन नौजवानों ने यह शर्त स्वीकार कर ली, जिन में वह सेठ का इकलौता बेटा भी था। इस मूर्ख नव युवक ने अपनी ताक़त का गलत अनुमान लगाया और इसीलिए इतना अधिक समय पानी के अन्दर ज़बरदस्ती रहा, कि जिस से उसका दम टूट गया और वह डूबकर मर गया। अब इस नव युवक की मृत्यु जो अकाल मृत्यु थी, वह कभी न होती, यदि उस को अपनी ताक़तों की हद बन्दी का ज्ञान होता। वह अपनी अवस्था से अन्धा और अज्ञानी था। उसने अपनी ताक़त का गलत अनुमान लगाया और वह मृत्यु का शिकार हो गया। इसी प्रकार की ही एक और घटना देहली की है। वहां एक जन से यह शर्त लगाई, कि वह इतनी रोटियां खा सकता है, और वह उतनी ही रोटियां खा गया। बेशक वह रोटियां तो खा गया, परन्तु उसने अपने पेट का गलत अनुमान लगाया। थोड़े ही समय के अनन्तर वह उनका फल भुगतने लगा। उसके पेट में ऐसा दर्द शुरू हो गया, कि वह इलाज होते २ ही चन्द घण्टों में तड़प २ कर मर गया। यह जन बहुत मूर्ख था। अपने पेट की प्रकृत अवस्था से अन्धा था, अपनी ताक़त का उस ने गलत अनुमान

लगाया। इसी प्रकार की एक और बहुत दर्दनाक घटना है।

इन शारीरिक घटनाओं को छोड़कर मनुष्य के अन्य पहलुओं को देखा जाए, तो भी हमें यह सत्य नज़र आएगा, कि अपनी अवस्था का ठीक ज्ञान न होने से मनुष्य बहुत घाटा उठाता है। पैसों के सम्बन्ध में भी अपनी अवस्था का ज्ञान न होने से हज़ारों दुकानदारों का दीवाला निकल जाता है। कई दुकानदारों का ऐसा दीवाला तो मेरे तजरुबे में आया हुआ है। एक परिवार का मुझे पता है, कि उस परिवार के दो नौजवान बेटे एक एजेन्सी लेकर एक अच्छे शहर में काम कर रहे थे। मैंने उन दोनों नौजवानों से पूछा कि बताओ, तुम्हारा क्या हाल है। दोनों ने बहुत खुशी से मुझे बताया, कि हमारा बहुत अच्छा हाल है। चन्द दिन बाद मैं उस एजेन्सी के इन्सपैक्टर को मिला और मैने स्वभाविक उस को बताया, कि तुम्हारी एजेन्सी अमुक शहर में जिन दो भाइयों ने ले रक्खी है, उनका बहुत अच्छा हाल मालूम होता है। वह मेरी बात सुनकर हंस पड़ा और मुझे कहने लगा, कि उनका ऐसा बुरा हाल है, कि मैं प्राय: प्रति दिन ही ऐसी खबर की उम्मीद करता हूं, कि आज या कल उनका दीवाला निकल जाएगा। आख़िर ऐसा ही हुआ। थोड़े समय के बाद मुझे पता लगा, कि उन नौजवानों का दीवाला निकल गयाहै, और मुझे बताया गया, कि उन्हें प्राय: तीस चालीस हज़ार रुपए का घाटा पड़ गया और वह ख़ानदान प्राय: उजड़ गया। कैसी हैरानी की बात कि चन्द सप्ताह या चन्द मास पहले वह नौजवान इस अन्धता में थे, कि वह दिनों दिन उन्नति कर रहे हैं, जब कि उन दिनों में भी बोधी जन यह विश्वास रखते थे, कि यह थोड़े दिनों में उजड़ जायेंगे। अपनी ऐसी अवस्था से अन्धे और अज्ञानी रहकर उन नौजवानों ने न केवल बड़ा भारी घाटा उठाया, किन्तु मुसीबतों में भी फंस गए। ऐसी घटनायें इतनी अधिक है, कि जिन के एकत्र करने से एक बहुत बड़ी पुस्तक लिखी जा सकती है।

इसी प्रकार ही एक २ मनुष्य अपनी ताक़त का गलत अनुमान लगाकर अपनी अवस्था से अन्धा हो कर ऐसा काम कर बैठता है, जिस से सारी उमर पछताता रहता है। अपनी विकालत के दिनों में मैं एक तहसीलदार की कोर्ट में गया। वह दौरे पर था। और दूर जगह पर था। दूर जगह पर मुझे देखकर वह खुश हुआ और अपने काम को छोड़कर मेरे साथ बातचीत में लग गया। यह जन बड़ा रिश्वत ख़ोर था और वर्षों तक रिश्वत लेकर भी वह पकड़ा नहीं जा सका था। वह मुझे अभिमान से कहने लगा, कि मेरी माता ने मुझे आशीर्वाद दिया था, कि बेटा! तुम्हारी जेब सदा मोहरों से भरी रहेगी। और ऐसा ही हुआ है। यह कहते ही उस ने अपना बटुवा खोल दिया, जो मोहरों से भरा हुआ था। मुझे बटुवा इसलिए दिखाया, कि मुझे पता लग जाए, कि उस की जेब सदा मोहरों से भरी ही रहती है। मैं उस कोर्ट से वापिस आया ही था, कि मैंने सुना, कि उस हुशियार जन ने यह विचार कर कि वह थोड़े दिनों में पैन्शन में चला जाएगा, इतना अन्धा हो गया, कि बेतहाशा रिश्वत लेनी शुरू कर दी। फ़सल खड़ी थी ओर उस ने रिपोर्ट यह कर दी, कि सारी फ़सल उजड़ गई है, और ज़मीदारों को मालिया से माफ़ी दी जाये। उस ने मालिया के आधे पैसे प्रत्येक ज़मीदार से पहले ही ले लिए थे, वह उस की बड़ी भारी गलती थी। अपनी चतुराई के घमंड में अपनी ताक़त का गलत अनुमान लगाया। और घमंड के कारण अपने अफ़सरों को मूर्ख समझा। यह हुशियार और अपनी अवस्था से अबोधी जन आख़िर पकड़ा गया। उस पर मुकद्मा चला। उस को कई साल का जेल मिला, और बहुत सा जुर्माना हुआ। उस ने अपने बचाव के लिए जो ख़र्च किया, वह भी कई हज़ार रुपए थे। कहा जाता है, कि उसकी नक़दी प्राय: सारी ख़र्च हो गई। यह जन कभी इस मुसीबत में न फंसता, यदि अपनी होशियारी का गलत अनुमान न लगाता और अपने अफ़सरों को मूर्ख न

समझता।

पारिवारिक जीवन में भी कई स्त्री पुरुष अपनी अवस्था से अन्धे होकर बड़ी मुसीबत उठाते हैं। अमरीका के एक भद्र जन में अपने ही लिखे हुए बयान में यह लिखा था, कि दस वर्ष पहले उस ने अपनी पत्नी को तलाक़ दे दिया था। वह पत्नी कई पहलुओं में उनके लिए सेवाकारी होती थी। किसी बात पर इन दोनों का अनमेल हो गया। उस ने यह गलत अनुमान लगाया, कि यदि वह अपनी पत्नी को तलाक दे दे, तो मुसीबत से बच जाएगा। परन्तु हुआ क्या? वह भद्र जन लिखते हैं, कि उन के यह दस वर्ष कुछ महीनों को छोड़कर इस क़दर दुख से गुज़रे हैं, कि जिस का वह बयान नहीं कर सकता। उस ने बताया, कि काश मुझे पता होता कि ऐसी अच्छी पत्नी से जुदा होकर मैं क्या २ दुख उठाऊंगा। जिन अनमेल को लेकर मैंने पत्नी को तलाक़ दिया, वह मेरे अकेलेपन के आने वाले दुख की तुलना में कुछ भी वज़न न रखता था। मैंने गलत अनुमान लगाया, कि मुझे पत्नी की कोई आवश्यकता नहीं और इस अज्ञानता का बहुत कड़वा फल मैं भोग रहा हूं। इस प्रकार के कई इकबाल मैंने सुने और पढ़े है। एक २ सम्बन्ध से अन्धा होकर और उस की क़ीमत से बेसुध होकर एक २ मनुष्य जो दुख उठाता है, वह कई बार असह्य प्रमाणित होता है। कई आत्मा इस असह्य दुख के कारण अपना आत्म घात भी कर लेते है। एक और परिवार की घटना है, कि जो मेरे तजरुबे में आई हुई है। एक अच्छा विद्वान और बहुत अच्छे ख़ानदान वंश का नौजवान पति अपनी पत्नी को बहुत प्यार करता था, और इतना अधिक प्यार करता था, कि उसकी पत्नी के अन्दर यह विश्वास बैठ गया, कि यह मेरे बिना नहीं जी सकता। यह पत्नी भी विद्वान थी और एक बहुत अच्छे वंश की बेटी थी। एक बार उस पति का एक राजनैतिक विषय में एक ऐसे बड़े जन के साथ झगड़ा हो गया, कि जो उस की पत्नी के बाप का मित्र था। इस पति ने अपनी पत्नी से यह चाहा, कि वह उस के साथ हो जावे, न कि बाप के साथ। यह पत्नी अपने बाप के साथ हो गई ओर अपने पति का पक्ष छोड़ दिया। पति ने पत्नी को बता दिया थाा, कि यह विषय ऐसा नाज़ुक है, कि यदि वह बाप का पक्ष लेगी, तो वह उस से सदा के लिए अलग हो जाएगा। शोक! पत्नी ने अपने पति के वचनों की गम्भीरता को न समझा और जो वह अपने पति के दिल पर अधिकार रखती थी, उसका गलत अनुमान लगाया। इस का जो भयानक फल हुआ, वह यह कि पति ने उस को जवाब दे दिया। पत्नी का ख़याल था, कि वह लड़कों की मां है, इसलिए उनका पति सीधा होकर आप ही उस के पास आ जाएगा। पति ने बेटों को भी छोड़ दिया और कुछ सालों के बाद दूसरी शादी भी कर ली। पत्नी बहुत पछताती रही, परन्तु "अब पछताए क्या हो, जब चिड़ियां चुग गई खेत।" इस स्त्री को उस की अन्धता ने दुख की गार में फैंक दिया। अपनी ताकत का गलत अनुमान लगाना कैसा महा भयानक!

देव समाज के अन्दर आत्मिक जगत् के कई ऐसे दृश्य है, कि जो इस बेसुधि की भयानक अवस्था को अत्यन्त उज्जवल रूप से प्रगट करते हैं। स्थूल देह त्यागी पण्डित देव रत्न ने अपनी ताक़त का गलत अनुमान लगाया। भगवान् देवात्मा से कट कर उस ने यह प्रगट करना आरम्भ किया, कि वह भगवान् देवात्मा से भी ऊपर है, ओर अपने घमंड में एक "उच्च जीवन प्रचारनी सभा" की बुनियाद डाली। उन्होंने यह समझा, और गलत समझा, कि जो फल वह भगवान् देवात्मा के देव प्रभावों को पाकर पैदा कर सकते थे, वह फल वह देव प्रभावों से कटकर भी पैदा कर सकेंगे। अन्त में हुआ क्या? उच्च जीवन औरों में पैदा करना तो कहीं रहा, वह अपने भीतर के ही कई उच्च भावों को खो बैठे। कहलाने वाली उच्च जीवन प्रचारनी सभा का लेश मात्र भी न रहा, और उनकी अपनी ही लेखनी से उनकी आत्म अन्धता ने उन से

यह स्वीकार कराया, कि किस पतनकारी जीवन के कारण वह देव समाज से अलग किए गए थे। उसके बाद वह कई वर्ष तक जीते रहे, परन्तु उनके जीवन के उस कार्य का कोई परिचय न मिला, कि जो कार्य वह भगवान् देवात्मा के देव प्रभावों को पाकर किया करते थे। एक और कर्मचारी ने इसी प्रकार अपनी अवस्था का गलत अनुमान लगाया। भगवान् देवात्मा के देव प्रभावों को पाकर उन की वाणी का असाधारण असर दूसरों पर होता था और वह आत्माओं में असाधारण परिवर्तन पैदा किया करते थे। यदि वह होश की हालत में रहते, और अपने आप को भिखारी समझते और भगवान् देवात्मा को दाता बोध करते, तो वह अपने और दूसरों के लिए बहुत हितकर प्रमाणित हो सकते परन्तु शोक! कि वह अपनी भिखारी अवस्था को भूल गए। दाता का दान पाकर अपने आप को ही दाता समझने लगे, और उन्होंने भगवान् देवात्मा के चरणों में यह लिखने का साहस किया, कि जो पौधा एक बड़े वृक्ष के नीचे है, वह वृक्ष से दूर और बाहर रहकर जिस क़दर फैल सकता है, उतना उस वृक्ष के नीचे रहकर फल फूल नहीं सकता। इस अन्धता की अवस्था में पहुंच कर वह भगवान् देवात्मा से कट गए। उस के बाद कई वर्ष तक वह जीते रहे, परन्तु न उन का अपना जीवन सर सबज़ रहा, न औरों को वह सर सबज़ कर सके। उन के मरने से कुछ दिन पहले देव समाज के दो कर्मचारी उन से मिलने के लिए गए। उन्होंने उन कर्मचारियों को सरलता से बताया, कि भगवान् देवात्मा को छोड़कर मैंने बहुतेरे पापड़ बेले, परन्तु बना बनाया कुछ नहीं। मैं तो समझता हूं, कि मेरा जीवन निष्फल गया। इसी प्रकार उन सब आत्माओं का हाल है, कि जो भगवान् देवात्मा के दरबार से कट गए हैं। एक भद्र जन ने भगवान, देवात्मा के सामने यह स्वीकार किया था, कि उनकी समाज से कट कर उसके जीवन में जो घाटा पड़ा, वह यह था, कि वह परोपकार के काम करने से वंचित हो गए। यह भद्र जन तो भगवान देवात्मा के सम्बन्ध में श्रद्धावान् थे। परन्तु जो भगवान् देवात्मा से पूर्णत: कट गए, उन का साधारणत: जो मुरदा ख़राब हुआ है, वह इतिहासक घटनायें हैं। ऐसे प्रत्येक जन के जीवन में यह परिवर्तन तो अवश्य आता है, कि भगवान् देवात्मा की सेवकी के ज़माने में उनका प्रयान जो अपनी आत्मिक अवस्था की ओर जाता था, वह बन्द हो गया। भगवान् देवात्मा से कट कर वह आत्मिक जगत् से सदा के लिए कट गए। पहले ज़माने में जिन को अपने उपकारी नज़र आते थे, उन को उपकारी नज़र आने बन्द हो गए, जिन के सामने औरों के गुण आते थे, उनको उनके गुण नजर आने बन्द हो गए, जिन को अपनी नीचतायें और हीनतायें नज़र आती थीं, उन के जीवन में यह कार्य बन्द हो गया। जिन को नीच जीवन भयानक नजर आता था, उनकी नीच जीवन ही लाभ करने की वस्तु नजर आने लगा। जिन को उच्च जीवन प्रकृत लाभ का सौदा नजर आता था, उन को उच्च जीवन मख़ौल नजर आने लगा। एक २ जन जो भगवान् देवात्मा के दर का भिखारी रहना बाहर की बड़ी पदवी की तुलना में अधिक लाभ का सौदा अनुभव करता था, और जो भगवान् देवात्मा की सेवा करके तृप्ति अनुभव करता था, वह भगवान् देवात्मा से कटकर अपने नीच रूप को भगवान् देवात्मा से भी बड़ा देखने लगा और भगवान् देवात्मा की सेवा करने की बजाए उन को गालियां देने में तृप्ति लाभ करने लगा। और उनके कार्य को बढ़ाने की बजाए उस की जड़ें उखाड़ने के अपवित्र काम में लग गया। एक २ जन जो भगवान् देवात्मा की सेवकी के ज़माने में अपने माता पिता, भाई बहिनों, पति पत्नी और देश वासियों आदि के प्रति अपने कर्तव्यों को देखकर उनके पालन करने के काम में लगा रहता था, और ऐसे नाना सम्बन्धों में सेवाकरी और सुन्दर जीवनधारी प्रमाणित होता था, वह भगवान् देवात्मा से कटकर उन सब सम्बन्धों में अपने

Published on 5th of the month
20
Regd. Postal No.CHD /0077/ 2018-2020
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

कर्तव्यों से बेवफ़ा बन गया, और उन्हें सुख देने की बजाए उनके लिए दुखदाई बनने लगा और सेवाकारी होने के स्थान में अपहरणकारी बन गया।

भगवान् देवात्मा के जो सेवक और सेवका इस सच्चाई से विमुख होते जायेंगे, कि वह भगवान देवात्मा के दर के भिखारी हैं, और भिखारी रहकर ही अपना सर्वोच्च हित साधन कर सकते हैं, वह इस महोच्च अधिकार को खो बैठेंगे, और भगवान् के देव प्रभावों से उनके जीवन में जो सुन्दर परिवर्तन नज़र आता है, वह सारे का सारा बन्द हो जाएगा; और नीच जीवन जो उन को भयानक नज़र आता है, वह उनकी नज़रों से लोप हो जाएगा और वह आत्मिक पतन में पड़कर अपने आत्मा का खून कर देंगे। इस सच्चाई को देखकर और पढ़कर हम डरें ओर नेचर के हुकम को सुनकर यह स्वीकार करें, कि हमारे आत्मिक जीवन का सारा सहारा और उच्च हित साधन भगवान देवात्मा के चरणों में है। और हम सब भगवान् देवात्मा की देव ज्योति और देव तेज के सदा के लिए मुहताज है।

आवश्यक सूचना

प्यारे धर्म सम्बन्धियों! जैसे पहले सूचना दी गई है कि महा-उत्सव 29, 30, 31 दिसम्बर और पहली जनवरी तक मनाया जाना है। परन्तु वर्तमान कोविड के हालातों के अनुसार महोत्सव से 10 दिन पहले सारा प्रोग्राम पक्का होगा, उसके अनुसार आप लोगों को फोन के द्वारा सूचित किया जाएगा। कृपा करके आप अपनी तैयारी रखें, ताकि उस समय आपको कोई असुविधा न हो।

-मन्त्री देव समाज

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक
"धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर*
म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।

Book Posts